ब्रह्माकुमारी ऊषा जी के साथ पवित्रता संपन्न जीवन की दास्तान

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

प्रस्तुत लेख द्वारा ब्रह्माकुमारी ऊषा जी के साथ के 50 सालों के अनुभवों को, गागर में सागर की तरह समाकर उन्हें लौकिक परिवार तथा दैवी परिवार की ओर से ईश्वरीय स्नेह संपन्न श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

बात सन् 1960, जनवरी मास की है, तब मुंबई में वाटरलू मेन्शन में सेवाकेन्द्र था। दादी पुष्पशांता मुख्य संचालिका थीं। वह भोग लेकर बाबा के पास गईं तो सूक्ष्मवतन में शिवबाबा ने उन्हें हमारे घर में शादी के उत्सव का दृश्य दिखाया। उस आधार पर उन्होंने मेरी लौकिक माता शांता माता को उलाहना दिया कि आपके घर शादी का कोई बड़ा कार्यक्रम होने वाला है और आपने हमें बताया ही नहीं। शांता माता ने कहा, मुझे भी मालूम नहीं। बाद में शांता माता ने मुझसे पूछा कि क्या आपके विवाह की बात चल रही है? मैंने कहा, मुझे तो कुछ मालूम नहीं। और बात ऐसे ही रुक गई परंतु मेरे मन में आया कि शिवबाबा ने भोग में कोई दैवी संकेत दिया है।

उस समय मैं मुंबई में माधव बाग स्थित श्रीमत भगवद्गीता पाठशाला से संलग्न था जिसके आधारस्तंभ आदरणीय पांडुरंग शास्त्रीजी थे जिन्हें हम प्यार से शास्त्री जी या दादा भी कहते थे। सन् 1960, अप्रैल में एक रविवार को शास्त्री जी ने मुझे कहा कि एक ऊषा नाम की बहन अपनी पाठशाला में आती है, आप उन्हें जानते हैं? मैंने कहा, मैंने देखा है लेकिन कभी बातचीत नहीं की। तब शास्त्री जी ने कहा, ऊषा बहन प्रतिदिन प्रात: 4 बजे उठकर पतंजलि योग करती है, सामने श्रीकृष्ण का चित्र रखकर। थोड़े समय से उसको योग में विचित्र अनुभव हो रहे हैं, उसके कमरे की खिड़की के पास से एक व्यक्ति श्रीकृष्ण के चित्र पर रोशनी डालता है जिससे श्रीकृष्ण का चित्र गायब हो जाता है और एक व्यक्ति का चित्र आ जाता है। ऊषा बहन इसका रहस्य जानने के लिए मेरे पास आई। मैंने ऊषा जी को बताया कि इस दृश्य के द्वारा परमात्मा उन्हें संदेश देना चाहते हैं कि वह उस व्यक्ति के साथ विवाह करे तो जीवन बहुत सुखी हो जायेगा। शास्त्री जी ने आगे मुझे बताया कि ऊषा द्वारा वर्णित उस चित्र से मिलते-जुलते दो व्यक्ति गीता पाठशाला में आते हैं। रविवार को शास्त्री जी ने उस दूसरे व्यक्ति की तरफ इशारा करके ऊषा से पूछा तो ऊषा ने कहा, यह वह व्यक्ति नहीं है। फिर मुझे दिखाकर ऊषा से पूछा तो ऊषा ने कहा, यही वह व्यक्ति है जिनका चित्र मेरे सामने योग में आ जाता है। फिर शास्त्री जी ने मेरे सामने विवाह का प्रस्ताव रखा और कहा कि आप ऊषा से मिलो। मैंने कहा, मुझे मिलने की ज़रूरत नहीं क्योंकि मेरे बारे में आप ज्यादा अच्छा निर्णय कर सकते हैं अर्थात् मेरी हाँ है।

फिर दोनों परिवारों के बड़ों की आपस में बात हुई। एक दिन ऊषा अपनी सखी के साथ मेरे ऑफिस में आई व अन्य बातें करने के बाद मुझसे सीधा प्रश्न पूछा कि क्या आप पवित्र जीवन व्यतीत करने को तैयार हैं? मैंने एक सेकंड में कहा, हाँ, परंतु एक बात है कि भक्ति मार्ग में वचन भंग का सौ गुणा दंड धर्मराजपुरी में मिलता है इसलिए हम तीन साल के लिए निर्णय लेते हैं, बाद में पुन: तीन साल के लिए निर्णय लेंगे। इस प्रकार पवित्रता हमारे जीवन का आधारस्तंभ बन गया। उस समय तक ऊषा को ब्रह्माकुमारी संस्था का कोई ज्ञान नहीं था और पवित्रता का यह संकल्प उसने गीता आदि के अभ्यास द्वारा ही कहा था